मैं पानी हूँ

परमार्थ समाज सेवी संस्थान

मैं एक बूंद हूं

जो हर साल आपके घृर, खेत-खलिहान में एक नई रोशनी की किरण लेकर जी भरकर बरसती हूं। मेरी असिलियत से अभी तक अनजान आप मुझे एक बूंद कह सकते है। लेकिन मेरी सच्चाई यह है कि पलकों की सीप में कैद एक अनमोल मोती के रूप में सहेजकर रखी हुई आंख की एक बूंद हूं। नदी, झरने, झील, सागर की लहरों का एक छोटा रूप हूं मैं। बरसना तो मेरी नियति है। मैं बरसती हूं तो जीवन बहता है। मैं ठहरती हूं, तो जीवन ठहरता है। जब जीवन का हर पल दूजे पलों से अनजाना होकर किसी कोने में दुबक कर बैठ जाता है। तब इस ठहराव को रोकने के लिए फिर बरसती हूं मैं।

मैं जब भी बरसती हूं, जी भरकर बरसती हूं। फिर यह नहीं देखती कि कहां बरस रही हूं। मैं तो धरती पर समाने के लिए बरसना चाहती हूं, लेकिन आप मुझे सहेजना ही नहीं चाहते। बहना मेरा स्वभाव है, रोकना है तो इस तरीके से रोको की रिस-रिसकर में धरती के पेट में समाऊं और जब जरूरत हो आपकों काम आ जाऊ।

इस बार आपसे एक वादा लेना चाहती हूं। मैं अपनी असंख्य सखियों के साथ जब आपके घर, आंगन, खेत-खलिहान में जमकर बरसूंगी, तब आपको सारी मेंरी बूंदों को सहेजना होगा। तभी मेरा जन्म सार्थक होगा। मैं बूंद हूं। कभी पलकों पर मेरा बसेरा होता है तो कभी अधरों पर मेरा आशियाना। मुझे तो हर हाल में, हर अंदाज में जीना है। अब यह आपके ऊपर निर्भर है कि आप मुझे कब तक जिंदा रखना चाहते है?

पानी एक अनमोल रत्न

''पानी'' एक ऐसा तत्व जिसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। लेकिन आज कल की परिस्थिति यह हो गयी है कि इस तत्व के लिए हर जगह त्राहिमाम मचा हुआ है। देश का ऐसा कोई हिस्सा नहीं है, जिसे प्रकृति उसके लायक पानी न देती हो, लेकिन आज दो घरों, दो गांवों, दो शहरों, दो राज्यों और दो देशों के बीच भी पानी को लेकर एक न एक लड़ाई हर जगह मिलेगी।

हमने विकास की दौड़ में सब जगह एक सी आदतों का संसार रच दिया है, पानी की एक जैसी खर्चीली मांग करने वाली जीवनशैली को आदर्श मान लिया है। अब सबको एक जैसी मात्रा में पानी चाहिए और जब नहीं मिल पाता तो हम सारा दोष प्रकृति पर, नदियों पर थोप देते हैं।

जल संकट प्रायः गर्मियों में आता था, अब वर्ष भर बना रहता है। ठंड के दिनों में भी शहरों में लोग नल निचोड़ते मिल जाएंगे एवं गांवों में किसान अपनी खेती में पानी देने के लिए कुओं में झांकते देखे जा सकते है।

अकाल, सूखा, पानी की किल्लत, ये सब कभी अकेले नहीं आते इसके पहले अच्छे विचारों और अच्छे कामों का अभाव पहले आ जाता है। हमारी धरती सचमुच मिट्टी की एक बड़ी गुल्लक है। इसमें **100** पैसा डालेंगे तो **100** पैसा निकाल सकेंगे। लेकिन डालना बंद कर देंगे और केवल निक. ालते रहेंगे तो प्रकृति चिट्ठी भेजना भी बंद करेगी और सीधे-सीधे सजा देगी। आज यह सजा सब जगह कम या ज्यादा मात्रा में मिलने लगी है।

पानी अभी भी हमारे लिए राशन जितना महत्वपूर्ण नहीं हो पाया है, लेकिन जब यही पानी पेट्रोल से भी महँगा मिलेगा, तब शायद हमें समझ में आएगा कि सचमुच यह पानी को हमारे चेहरे का पानी उतारने वाला सिद्ध हुआ। हमारे देखते-देखते ही पानी निजी हाथों में पहुँचने लगा। पानी का निजीकरण पहले यह बात हम सपने में भी नहीं सोच पाते थे, लेकिन आज जब सड़कों के किनारे पानी की खाली बोतलें, पॉलीथीन आदि देखते हैं, तब समझ में आता है कि यह पानी तो सचमुच कितना महँगा हो रहा है। यह सच है कि पानी का उत्पादन कतई संभव नहीं है। कोई भी उत्पादन कार्य बिना पानी के संभव नहीं। जन्म से लेकर मृत्यु तक पानी की आवश्यकता बनी रहती है। पानी को प्राप्त करने का एकमात्र उपाय वर्षा जल को रोकना। इसे रोकने के लिए पेड़ों का होना अतिआवश्यक है। जब पेड़ ही नहीं होंगे, तब पानी जमीन पर ठहर ही नहीं पाएगा। अधिक से अधिक पेड़ों का होना यानी पानी को रोककर रखना है। दूसरी ओर हमारे पूर्वजों ने जो विरासत के रूप में हमें नदी, नाले, तालाब और कुएँ दिए हैं, उन्हीं का रखरखाब यदि थोड़ी समझदारी के साथ हो, तो कोई कारण नहीं है कि पानी न ठहर पाए।

जल ही जीवन है, यह उक्ति अब पुरानी पड़ चुकी है, अब यदि यह कहा जाए कि जल बचाना ही जीवन है, तो यही सार्थक होगा। मुहावरों की भाषा में कहें तो अब हमारे चेहरें का पानी ही उतर गया है। अब कोई चेहरा पानीदार नहीं रहा। हमारी चाहतों पर पानी फिर रहा है। पानी टूट रहा है और हम बेबस हैं।

भारत तेजी से जल का दबाव झेलने वाला देश बन रहा है, इसके लिए व्यक्ति को स्वयं जाग्रत होकर पहले पेयजल स्रोतों को प्रदूषण से बचाने के लिए जागृति पैदा करना, पेयजल स्रोतों के पुनर्जीवन, वर्षाजल का बांधो और तालाबों में संरक्षण, जल पुनर्भरण की आवश्यकता है। जिससे कि देश में हर कोई पेयजल की बुनियादी सुविधा प्राप्त करने में सक्षम हो सके।

साल 2021 में
विश्व जल दिवस

इस वर्ष विश्व जल दिवस पर वेल्यूइंग वाटर (पानी का महत्व) विषय पर पूरी दुनिया में एक अभियान के तौर एक वैश्विक सार्वजनिक बातचीत को जोर दे रहा है, कि व्यक्ति पानी के महत्व कैसे समझ सकते है। ''वेल्यूइंग वाटर'' का उददेश्य विभिन्न संद. भों में विभिन्न लोगों द्वारा पानी को कैसे महत्व दिया जा रहा है इसके बारे में समझ पैदा करना है, ताकि हम सभी के लिए पानी जैसे बहुमूल्य संसाधन का संरक्षण एवं सम्बर्द्धन किया जा सके। साल भर अभियान के द्वारा लोगों को ''वेल्यूइंग वाटर'' (पानी का महत्व) पर उनके कार्यों, विचारों और अनुभवों को योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा, जिससे समाज पानी के संकट के बारे में और अधिक जागरूक हो सके।

हम सब के लिए पानी का मतलब अलग-अलग है, इस साल बा. तचीत इसको लेकर है कि आपके लिए पानी का मतलब क्या है?

क्या आपने कभी
सोचा है

आपके घर और परिवार के जीवन, आपकी आजीविका, आपकी सांस्कृतिक प्रथाओं, आपके स्थानीय वातावरण के लिए पानी कितना महत्वपूर्ण है?

आपके घरों, स्कूलों और कार्यस्थलों में, पानी से स्वास्थ्य, स्वच्छता, गरिमा कैसे बढती है?

सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक स्थानों में, पानी का क्या महत्व है?

आज हम सब देख रहे है कि, विश्व में बढ़ती आबादी, कृषि और उद्योग की बढ़ती मांगों और जलवायु परिवर्तन के बिगड़ते प्रभावों से लगातार जल संकट बढता जा रहा है। हम इस साल अपनी कहानियों, विचारों और भा. वनाओं को अलग-अलग तरीकों से व्यक्त करे कि पानी हमारे जीवन को कैसे लाभ पहुंचाता है, पानी का हमारे जीवन में क्या महत्व है और कैसे इस अति महत्वपूर्ण तत्व को सभी के लिए प्रभावी ढंग से सुरक्षित कर सकते हैं।

विश्व जल दिवस मनाने का अर्थ है कि हम विश्व के **220** करोड लोग जिन्हें आज भी शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं है, उन्हें जागरूकता के माध्यम से शुद्ध पेयजल तक पहुच बना सके। दूसरी ओर लगतार बढ रहें जल एवं जलवायु संकट से निपटने के लिए विविध माध्यमों से हस्तक्षेप के बारे में है। विश्व जल दिवस का एक मुख्य उददेश्य **2030** तक सभी के लिए सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) **6**: पानी और स्वच्छता की पूर्ण उपलब्धि प्राप्त करना है।

विश्व जल दिवस 2021 का विषय
''वेल्यूइंग वाटर'' (जल का महत्व)

लगातार बढ़ती वैश्विक आबादी और देशों में बढती आर्थिक विकास की दौड के कारण लगातार पानी का उपयोग बढ रहा है, कृषि एवं उद्योगों के लिए में बढती पानी की मांग से भूजल स्तर में लगातार गिरावट आ रही है, वही कृषि क्षेत्र में हो रहे अंधाधुंध कीटनाशकों के उपयोग एवं कारखानों से निकल रहे विषैले रसायन से जल लगातार प्रदूषित हो रहा है। जिससे जलवायु परितर्वन एवं वर्षा अनियमित हो रही है। पानी का महत्व उसकी कीमत से बहुत अधिक है - पानी हमारे घरों, संस्कृति, स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिकी और हमारे प्राकृतिक वातावरण के लिए बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण मूल तत्व है। इसलिए हमें यह देखाना होगा कि हम पानी के महत्व को कैसे निर्धारित करते हैं, पानी का कैसे सम्बर्द्धन एवं प्रबधंन किया जा सकता है।

अलग–अलग क्षेत्र में ''वेल्यूइंग वाटर'' (जल का महत्व)

1- पानी के स्रोतों का महत्व -

विश्व में जितना पानी है सब प्राकृतिक रूप से उत्पन्न हुआ है, जिसे व्यक्ति अपने उपयोग में लाता है और फिर परास्थितिकी तंत्र में दूषित कर छोड देता है, दूसरी ओर जल चक्र हमारी सबसे महत्वपूर्ण परिस्थितिकी तंत्र है। जो हमें बाढ एवं सूखे से बचाकर, पर्यावरण का रक्षा कवच बनकर उतना ही पानी प्रदान करता है, जिससे ना बाढ आये ना ही सूखा पडे लेकिन यह भी जलवायु परिवर्तन के कारण लगातार बदल रहा है।

2-पानी का बुनियादी ढांचा - भंडारण, उपचार और आपूर्ति

पानी का सहेजना आज से कई सौ सालों से पहले सीख लिया गया, जिसके लिए बडे-बडे बांधों, तालाबों का निर्माण किया गया, इन बांधों के पानी को उपचारित करने के लिए त्रिकुंडीय व्यवस्था थी। पहले एक कुंड में पानी जाता था। दूसरे में थोड़ा निथर (साफ होकर) कर जाता था और तीसरे में एकदम साफ हो जाता था। ये पानी को स्वच्छ करने का एक प्राकृतिक तरीका था। इसे बाद जहां इसकी सबसे ज्यादा आवश्यकता होती थी, वहां इसका उपयोग किया जाता था। अब जहां यह बुनियादी ढांचा अपर्याप्त है, वहां का सामाजिक-आर्थिक विकास कम है और पारिस्थितिकी तंत्र खतरे में है।

3- जल सेवाओं का महत्व - पेयजल, स्वच्छता और स्वास्थ्य

पानी के महत्व को इस तरह भी समझा जा सकता है कि घरों, स्कूलों, कार्यस्थलों और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में पानी की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है। हम इसको वॉश के रूप में भी समझ सकते है- पानी, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य। पानी ही है जो इन सेवाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे हम वर्तमान में **COVID-19** महामारी के सन्दर्भ में भी देख सकते है।

4- उत्पादन और सामाजिक-आर्थिक गतिविधि के लिए पानी का महत्व - खाद्य और कृषि, ऊर्जा और उद्योग, व्यवसाय और रोजगार

कृषि जो ताजे पानी के बिना नहीं जा सकती, यह विश्व के ताजे पानी का सबसे ज्यादा उपयोग करती है। उद्योग एवं व्यवसाय जो पानी के पर्याप्त संसाधन ना होने पर स्थापित हो नहीं सकते। हमें इसके कई व्यापक लाभ होते है पोषण में सुधार, आय में वृद्धि, और पलायन को कम करता है। ऐसे में यह हमे दर्शाता है कि किसी भी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए पानी का महत्व क्या है।

5-पानी के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व - सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक गुण।

पानी जो हमें सांस्कृतिक, धार्मिक अैर आध्यात्मिक गुणों से भी जोडे रहता है। भारतीय संस्कृति में नदियों, जलाशयों, झीलों, तालाबों एवं कुओं का बहुत महत्त्व है। भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक पक्षों से नदियाँ और दूसरे जलस्रोत काफी गहरे से जुड़े हैं। विश्व की सारी सभ्यताएँ नदियों किनारे ही विकसित हुई हैं। भारत की सभ्यता भी इसका अपवाद नहीं हैं।

नदियों और झीलों जैसे जल के प्राकृतिक स्रोतों का तो भारतीय संस्कृति पर व्यापक प्रभाव है। लेकिन तालाब, पोखर और कुएँ जैसे जल के कृत्रिम स्रोत भी भारतीय समाज और संस्कृति से बहुत गहरे जुड़े हैं। इसका अन्दाजा ऐसे लगा सकते हैं कि जीवन के अधिकांश पक्ष जलाशयों के किनारे ही पूरे होते हैं। शादी-ब्याह, मेले ठेले, पूजा-उत्सव और अन्तिम संस्कार तक तालाबों के किनारे होते हैं।

वर्तमान में पानी की स्थिति

आधा देश अभी पानी की गंभीर समस्या से जूझ रहा है। जो पानीदार देश था, वो बेपानी हो रहा है। नीति आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है कि देश के 21 शहर डे जीरो हो जाएंगे यानी इनके पास पीने के लिए खुद का पानी भी नहीं होगा। इसमें बेंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली और हैदराबाद जैसे शहर शामिल हैं।

भारत में जल उपलब्धता व उपयोग के कुछ तथ्यों पर विचार करें तो भा. रत में वैश्विक ताजे जल स्रोत का मात्र 4 प्रतिशत मौजूद है जिससे वैश्विक जन. संख्या के 18 प्रतिशत (भारतीय आबादी) हिस्से को जल उपलब्ध कराना होता है।

पिछले वर्षो के मानसून कमजोर होने से देश के करीब 33 करोड़ लोग पानी की गंभीर समस्या से जूझ रहे हैं। करीब 50 प्रतिशत लोग सूखे जैसी समस्या का सामना कर रहे हैं। हर साल देश के कई राज्य इस समस्या से जूझते है, क्योंकि वहां वर्षा कम हो रही है।

नीति आयोग द्वारा जारी संयुक्त जल प्रबंधन सूचकांक (Composite water management index) के मुताबिक देश के 21 बड़े शहर (चेन्नई, बेंगलुरू, दिल्ली, हैदराबाद) 2020 तक जीरो ग्राउंड वॉटर लेवल पर पहुंच जाएंगे। इसके चलते 10 करोड़ लोग प्रभावित होंगे। इसी रिर्पोट के मुताबिक, 75 प्रतिषत घरों के पास अपनी जमीन में पीने का पानी और गांव के 84 प्रतिशत घरों में पानी के लिए पाइप कनेक्शन नहीं है।

देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घनमीटर थी, जो वर्ष 2000 में 2300 घनमीटर रह गई तथा वर्ष 2025 तक इसके और घटकर 1600 घनमीटर रह जाने का अनुमान है।

केंद्रीय जल आयोग के मुताबिक, अभी भी भारत को हर साल बारिश से जरूरत से ज्यादा पानी मिलता है। भारत को हर साल 3 हजार बिलियन क्यूबिक मीटर पानी की जरूरत होती है और हमें 7 हजार बिलियन क्यूबिक मीटर पानी मिलता हैं। समस्या यह है कि बारिश के पानी का सिर्फ 8 प्रतिशत ही हम इकट्ठा कर पाते हैं। यह दुनिया में सबसे कम है। वॉटर ट्रीटमेंट और उसके दोबारा इस्तेमाल करने के मामले में भी हम पीछे हैं। घरों में पहुंचने वाला 80 प्रतिशत वेस्ट के रूप में बाहर हो जाता है।

सीडब्ल्यूएमआई रिपोर्ट के मुताबिक, 2030 तक देश में पानी की मांग अभी हो रही आपू. र्ति के मुकाबले दोगुनी हो जाएगी। इससे लाखों लोग पानी की समस्या से जूझेंगे।

दुनिया में भूजल (ग्राउंड वॉटर) का सबसे ज्यादा उपयोग भारत करता है। चीन और अमे. रिका से भी इस मामले में हम आगे हैं। 2015 में स्टेंडिंग कमेटी ने पाया था कि भूजल का सबसे ज्यादा उपयोग कृषि और पीने के पानी की आपूर्ति के लिए किया जाता है। भूजल का करीब 89 प्रतिशत सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। 9 प्रतिशत घरेलू कामों और कारखानों में केवल 2 प्रतिशत उपयोग किया जाता है। शहरी क्षेत्र की 50 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र की 85 प्रतिशत जरूरतें भूजल से ही पूरी होती हैं। ज्यादा इस्तेमाल के चलते ही 2007 से 2017 के बीच भूजल स्तर में 61 प्रतिशत की कमी आई।

ऐसे बना सकते है अपने क्षेत्र को पानीदार

- ☐ जल संरचनाओं की जमीन को केवल जल संरचनाओं के लिए सुरक्षित करना चा. हिए।
- ☐ नदी-नालों के पानी में गंदा पानी मिल रहा है। यही पानी जमीन में जा रहा है। इससे पीने का पानी घट रहा है और गंदा पानी बढ़ रहा है। गंदा पानी हम उपयोग में नहीं लेते। इसे समुद्र में बहा दिया जाता है। नदी-नालों में गंदगी को रोकना चाहिए।
- ☐ खेती और उद्योग में मानव द्वारा उपयोग किए गए जल को परिशोधित करके काम में लेना चाहिए।
- ☐ जल संरचनाओं में हो रहे लीकेज रोकना होंगे। स्थानीय पानी के स्त्रोतों को पुनर्जी. वित करना होगा।
- ☐ भारत अभी सिर्फ बारिश का **8** प्रतिशत पानी ही कैप्चर कर पाता है, जो दुनिया में सबसे कम है, इसे बढ़ाना होगा। जहां भी पानी को रोका जा सकता है, वहां रोकना होगा।
- ☐ घरों का **80** प्रतिशत पानी वेस्ट के तौर पर बह जाता है। ऐसे पानी को दोबारा प्रयोग के लिए तैयार करना होगा
- ☐ उपयुक्त सीवेज सिस्टम साफ और सुरक्षित तरीके से अपशिष्ट जल के निपटान में मदद करते हैं। इसमें गंदे पानी को रिसाइकिल किया जाता है और उसे प्रयोग करने योग्य बनाया जाता है ताकि उसे वापस लोगों के घरों में पीने और घरेलू कार्यों में इस्तेमाल हेतु भेजा जा सके।
- ☐ सूखा प्रभावित क्षेत्रों में फसलों के पोषण के लिये अच्छी गुणवत्ता वाली सिंचाई प्रणाली सुनिश्चित की जा सकती है। इन प्रणालियों को प्रबंधित किया जा सकता है ताकि पानी बर्बाद न हो और अनावश्यक रूप से पानी की आपूर्ति को कम करने से बचने के लिये इसके पुनर्नवीनीकरण या वर्षा जल का भी उपयोग कर सकते हैं।

- देश में जल संरक्षण पर बल देना आवश्यक है और कोई भी इकाई (चाहे वह व्यक्ति हो या कोई कंपनी) अनावश्यक रूप से उपकरणों के प्रयोग को कम कर रोजाना कई गैलन पानी बचा सकता है।
- रेनवाटर हार्वेस्टिंग द्वारा जल का संचयन को बढावा देना चाहिए
- वर्षा जल को सतह पर संग्रहीत करने के लिये बांधों, तालाबों और चेक-डैम आदि का निर्माण करना चाहिए।

परमार्थ समाज सेवी संस्थान

प्रधान कार्यलय- आयकर विभाग के समाने, चुर्खी रोड, उरई, जालौन- **285001**
नेटवर्किंग कार्यालय- नजा हॉस्पिटल की दूसरी वाली गली, शिवाजी नगर, झांसी- **284001**

Email- parmarths@gmail.com
Website- www.parmarthindia.com
Phone- 0510-2321051, 05162254910

welt hunger hilfe
german cooperation

@PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN